Thursday, February 04, 2021

GEMS OF SPIRITUAL KNOWLEDGE

बंदउँ लछिमन पद जल जाता।
सीतल सुभग भगत सुख दाता॥
रघुपति कीरति बिमल पताका।
दंड समान भयउ जस जाका॥

भावार्थ-

मैं श्री लक्ष्मणजी के चरण कमलों को प्रणाम करता हूँ, जो शीतल सुंदर और भक्तों को सुख देने वाले हैं। श्री रघुनाथजी की कीर्ति रूपी विमल पताका में जिनका (लक्ष्मणजी का) यश (पताका को ऊँचा करके फहराने वाले) दंड के समान हुआ॥

LRPS/MSD BATHINDA

श्री राम चरित्र मानस

(बाल काण्ड)

प्रनवउँ पवनकुमार खल
बन पावक ग्यान घन।
जासु हृदय आगार बसहिं
राम सर चाप धर॥

भावार्थ:-

मैं पवनकुमार श्री हनुमान्‌जी को प्रणाम करता हूँ, जो दुष्ट रूपी वन को भस्म करने के लिए अग्निरूप हैं, जो ज्ञान की घनमूर्ति हैं और जिनके हृदय रूपी भवन में धनुष-बाण धारण किए श्री रामजी निवास करते हैं॥

श्री हनुमान चालीसा

SHRI HANUMAN CHALISA

चारों जुग परताप तुम्हारा,
है परसिद्ध जगत उजियारा॥

अर्थ-

चारो युगों सतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग में आपका यश फैला हुआ है, जगत में आपकी कीर्ति सर्वत्र प्रकाशमान है।

(Oh Hanumanji! You magnificent glory is acclaimed far and wide all through the four ages and your fame is radianlty noted all over the cosmos.)

ਸ਼੍ਰੀ ਸੁਖਮਨੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

SHRI SUKHMANI SAHIB JI

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸਗਲ ਕੀ ਰੀਨਾ ॥

ਰੱਬ ਦਾ ਗਿਆਤਾ ਸਾਰਿਆਂ ਦੀ ਧੂੜ ਹੈ।

ਬ੍ਰਹਮਗਿਆਨੀ ਸਾਰੇ (ਬੰਦਿਆਂ) ਦੇ ਪੈਰਾਂ ਦੀ
ਖ਼ਾਕ (ਹੋ ਕੇ ਰਹਿੰਦਾ) ਹੈ;

The God-conscious being is
the dust of all.

ਆਤਮ ਰਸੁ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਚੀਨਾ ॥

ਰੱਬ ਦਾ ਗਿਆਤਾ ਰੂਹਾਨੀ ਅਨੰਦ ਨੂੰ
ਅਨੁਭਵ ਕਰਦਾ ਹੈ।

ਬ੍ਰਹਮਗਿਆਨੀ ਨੇ ਆਤਮਕ ਆਨੰਦ ਨੂੰ
ਪਛਾਣ ਲਿਆ ਹੈ।

The God-conscious being
knows the nature of the soul.

SHRI GURU GRANTH SAHIB JI

ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

ਆਪਿ ਜਪਹੁ ਅਵਰਹ ਨਾਮੁ ਜਪਾਵਹੁ ॥

ਪ੍ਰਭੂ ਦਾ ਨਾਮ ਆਪ ਜਪਹੁ ਤੇ ਹੋਰਨਾਂ ਨੂੰ ਭੀ ਜਪਾਵਹੁ ।

ਭਗਤਿ ਭਾਇ ਤਰੀਐ ਸੰਸਾਰੁ ॥

ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਭਗਤੀ ਵਿਚ ਨਿਹੁੰ ਲਾਇਆਂ ਇਹ ਸੰਸਾਰ (ਸਮੁੰਦਰ) ਤਰੀਦਾ ਹੈ,

ਬਿਨੁ ਭਗਤੀ ਤਨੁ ਹੋਸੀ ਛਾਰੁ ॥

ਭਗਤੀ ਤੋਂ ਬਿਨਾ ਇਹ ਸਰੀਰ ਕਿਸੇ ਕੰਮ ਨਹੀਂ ।

SHRI BHAGAVAD GITA

(ch 03 : 08)

SRI KRISHNA :

You are obliged to act , Arjuna , even to maintain your body . Fulfill all your duties ; action is better than inaction .

In this verse Gita reminds us , Work is a necessity . Just imagine what would happen to people if they did not have the stimulus and release of daily work ! That is why Lord Krishna says , " When God gave you a mouth , he gave you two hands with which to feed the mouth . " Instead of using our hands to manipulate others , or to attack our enemies , we should use them to sustain ourselves and others .

Work is a particularly effective tonic when it is performed without desire for profit , prestige , or power . Let us ask ourselves how much our daily work contributes to the welfare of our family and community .

We are all given the choice in this life of acting for our own personal pleasure and profit , which will lead to ill will , frustration , and insecurity , or of acting for the benefit of others, which will lead to increasing health, security , and wisdom.

THE HOLY RIVER GANGA

SHRI HARIDWAR TEMPLE